प्रातः क्लास 28-4-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। यहस्कूल पाठशाला है। किसकी पाठशाला है? आत्माओं की पाठशाला है। यह तो जरूर है आत्मा शरीर बिगर कुछ सुन नहीं सकती हैं। जबकहा जाता है आत्माओं की पाठशाला तो समझना चाहिएआत्मा शरीर बिगर तो समझनहीं सकती। फिर कहना पड़ता है जीवात्मा। अभी जीवात्माओं की पाठशाला तो सभी है। इसलिए कहा जाता है यह आत्माओं की पाठशाला। और परमपिता परमात्मा आकर पढ़ाते हैं। वह है जिसकी मानी पढ़ाई यह है रूहानी पढ़ाई जो कि बेहद का बाप आकर पढ़ाते हैं। तो यह हो गई गाड-फादरली युनिवर्सिटी। भगवानुवाच है ना। यह भक्ति मार्ग नहीं है यह पढ़ाई है। स्कूल में पढ़ते हैं वह कोई भक्ति है क्या। भक्ति मंदिर टिकाणे आदि में होती है। पाठशाला में होती है पढ़ाई। यह पाठशाला है। कौन पढ़ाते हैं? भगवानुवाच। और कोई भी पाठशाला में भगवानुवाच नहीं कहा जाता। सिर्फ यह एक ही जगह है जहां भगवानुवाच है। ऊंच ते ऊंच भगवान को ही ज्ञान का सागर कहा जाता है। वही ज्ञान दे सकते हैं। बाकी तो जो सभी भक्ति मार्ग में हैं वह है भक्ति। भक्ति के लिए बाप ने समझाया है भक्ति दुर्गति है। फिर मुझे आकर पढ़ा कर सदगति करते हैं। देनी पड़ती है। गाया जाता है सर्व का सदगति दाता एक परमात्मा। क्या पढ़ाते हैं। आकर राजयोग पढ़ाते हैं। आत्मा सुनती है इस शरीर द्वारा। और कोई भी कालेज में भगवानुवाच है नहीं। भारत ही है जहां शिव जयन्ति मनाई जाती है। भगवान तो निराकार है फिर शिव जयन्ति कैसे बनाते हैं। जयन्ति तो तब होती है जब शरीर में प्रवेश करते हैं। बाप कहते हैं मैं तो गर्भ में कभी भी प्रवेश नहीं करता हूं। तुम सभी गर्भ में प्रवेश करते हो। 84 जन्म लेते हो। सब से 84 जन्म जास्ती यह ल०ना० लेते हैं। 84 जन्म लेकर फिर सांवरे गोरे का चोला बनते हैं। ल०ना० कहो वा राधे-कृष्ण कहो। राधे कृष्ण है बचपन में। वह जब जन्म लेते हैं तो स्वर्ग में लेते हैं जिसको वैकुण्ठ कहा जाता है। पहला नम्बर जन्म इनका है तो 84 जन्म भी यह लेते हैं। श्याम-सुन्दर। सुन्दर फिर सो श्याम। कृष्ण सभी को प्यारा लगता है। कृष्ण का जन्म तो होता ही है नई दुनिया में। फिर पुनर्जन्म लेते2 आकर पुरानी दुनिया में पड़ते हैं। पतित बन जाते हैं। फिर पतितों को पावन। पतित श्याम, पावन सुन्दर। ज्ञान चिक्षा पर बैठने से पावन बनते हैं। काम चिक्षा पर पतित। बाप समझाते हैं इस समय सभी काम चिक्षा पर बैठ काले हो गये हैं। काम चिक्षा पर जलने से काले हो जाते हैं। इनको कहा जाता है काम अग्नि। जिस में जलते हैं। जलते2 श्याम हो जाते हैं। फिर सुन्दर बनना है। यह खेल ही ऐसी है। भारत पहले2 है सतोप्रधान। सुन्दर। अभी काला हो गया है। बाप कहते हैं इतने सभी आत्माएं मेरे बच्चे हैं। 5-7 करोड़ आत्माएं सभी काम चिक्षापर बैठ जल कर काले हो गये हैं। मैं आकर सभी को वापस ले जाताहूं। यह सृष्टि का चक्र ही ऐसी है फूलों का बगीचा सो फिर कांटों का जंगल बन जाता है। जंगल को बगीचा नहीं कहा जाता। जंगल में जनावर जैसे रप्स रहते हैं। बाप समझाते हैं तुम बच्चे कितने सुन्दर, विश्व के मालिक थे। अभी फिर बन रहे हो। यह (ल०ना०) विश्व के मालिक थे ना। यह 84 जन्म भोग अभी फिर ऐसे बन रहे हैं। अर्थात इन्हों की आत्मा। आत्मा अभी पढ़ रही है। यह यह भक्ति नहीं हैं। भक्ति से तो पूरी दुर्गति होती है। तुम ने सब से जास्ती भक्ति की है। तो दुर्गति भी तुम्हारी हुई है। शुरू में भक्ति तुम ही करते हो। देवताएं वाममार्ग में जाते हैं। वाम-मार्ग कहा जाता है विकारी मार्ग को। इतने जन्म पवित्रमार्ग में थे इतने जन्म अपवित्र। तुम पवित्र प्रवृति मार्ग वाले। सन्यासी हैं निवृति मार्ग वाले। वह कब राजयोग सीखा नहीं सकते। वह सुख को काग बिष्टा समान समझते हैं। तुम कहते हो इस सुख है मनुष्यों को काग बिष्टा समान। अल्प काल क्षण भंगूर। सतयुग में तो तुमको इतनी अपार सुख है जो बाप को याद करने की दरकार ही नहीं। गायन भी है ना दुःख में सुमिरण सब करें.... किसका? बाप का। बाप का। इतने सभी को यों ही सुमिरण करना है। देवताएं तो कितने ढेर हैं। भक्ति मार्ग में कितने का सुमिरण करते हैं। जानते कुछ भी नहीं। कृष्ण कब आया, वह कौन है कुछ भी पता नहीं। कृष्ण और ना० में भी भेद क्या है यह भी कोई नहीं जानते। शिव बाबा है ऊंच ते ऊंच। फिर उनके नीचे ब्रहमा विष्णु शंकर। उनको

देवता कहा जाता है। यहां के जंगली लोग तो सभी को भगवान कह देते हैं। सर्वव्यापी कह देते हैं। बाप कहते हैं सर्वव्यापी तो माया 5 विकार है। एक एक के अन्दर। सतयुग में कोई में विकार होता नहीं। मुक्तिधाम में भी आत्मा आत्मारें पवित्र रहती हैं। अपवित्रता की कोई बात नहीं। तो यह रचयिता बाप ही आकर अपना भी परिचय देते हैं। रचना के आदि मध्य अन्त का राज़ भी समझाते हैं। अर्थात आस्तिक बनाते हैं। बाकी दुनिया में तो सभी हैं नास्तिक। तुम एक ही बार आस्तिक बनते हो। यह तुम्हारा जीवन देवताओं से भी उत्तम है। गाया भी जाता है मनुष्य जीवन दुर्लभ है। हीरे जैसा। अभी कौड़ी जैसा हीरे जैसा क्या होता है यह भी तुम जानते हो। कलियुग के अन्त में है कौड़ी जैसा। और फिर पुरुषोत्तम संगम युग पर हीरे जैसा जीवन बनता है। इनको (ल०ना०) को हीरे जैसा नहीं कहेंगे। तुम्हारा हीरे जैसा जन्म है। तुम हो ईश्वरीय सन्तान। यहां तुम कहते हो हम ईश्वर के सन्तान हैं। यह दैवी सन्तान। यहां तुम कहते हो हम ईश्वरीय सन्तान हैं। ईश्वर हमारा बाप है। वह हमको पढ़ाते हैं। क्योंकि ज्ञान सागर है ना। राजयोग सिखलाते हैं। गीता में जो भगवानुवाच है, वह रांग है। गीता को बिलकुल ही खण्डन कर दिया है। उन में नाम होना चाहिए बाप का। इसके बदलो नाम दे दिया है जिस पतित को पावन बनाते हैं उनका नाम डाल दिया है। कृष्ण की आत्मा के लिए कहेंगे। कृष्ण तो सतयुग में थे। फिर तो उनका नाम सभी बदल जाता है। उन्हों ने नाम कृष्ण भगवान लिख दिया है। वास्तव में कृष्ण तो होता है बैकुण्ठ में। वहां यह राज्य कहां से आया। लाया। यह तो सभी नई बातें हैं ना। यह ज्ञान एक ही बार मनुष्यों को मिलता है। जो पास्ट हुआ द्वापर से कलियुग तक, वह थी भक्ति। ज्ञान तो तुमको एक ही बार मिलता है। पुरुषोत्तम संगम युग पर। यह है उत्तम ते उत्तम बनने का युग। कलियुग और सतयुग के बीच। जिसको दुनिया में कोई भी नहीं जानते। सभी जैसे सभी कुम्भ करण के नींद में सोये पड़े हैं। कब्र दाखिल है ना। सभी का विनाश खड़ा है। इसलिए अभी तुम बच्चों को कोई से भी सम्बन्ध रखना न चाहिए। गीत भी है ना अन्त काल जो स्त्री सिमरे ... अन्त काल शिव बाबा को सुमिरे तो नारायण जूं बल बल अवतरे राजाई कुल में। सिवाय भगवान के और कोई को याद किया तो बल बल मनुष्य जूं में अवतरे। यह सीढ़ी बहुत अच्छा समझने की। हम कैसे 84 जन्म लेते हैं। सीढ़ी में लगा हुआ है। हम सो देवता, फिर हम सो क्षत्री, हम सो वैश्य शूद्र शूद्र। अक्षर है ना। यह है निशानी। यह रावण राज्य है ना। इनको शैतानी राज्य भी कहा जाता है। शास्त्र सिखलाने वाले दुर्गति को ही पाते हैं। कितने ढेर के ढेर गुरु हैं। जब कि कहते हैं पति ही गुरु है फिर पति को छोड़ निवृति मार्ग वाले सन्यासियों को अपना गुरु बनाते हैं। निवृति मार्ग वाले सन्यासी जो अपनी स्त्री को छोड़ करविधवा बना देते हैं बच्चों को आरफन बना देते ऐसे को फिर गुरु बनाने से क्या फायदा होगा। उन से तुमको दीक्षा लेनी होगी। कफनी पहन, माथा मूड़ा कर, सन्यासी बनो तब ही फालोअर्स कहा जाये। कहलावे सन्यासी का फालोअर और रहे गृहस्थ में तो फिर फालोअर कैसे ठहरे। यह सभी है नानसेन्स। कुछ भी अकल नहीं है। बिलकुल ही पत्थर बुधि हैं। तो क्या यह गुरु लोग तुमको पारस बुधि बनावेंगे। वह तो प्रवृति मार्ग को मानते ही नहीं। इनका धर्म ही अलग है। अपना आदी सनातन देवी देवता धर्म भूल और 2 धर्मों में फंस पड़े हैं। नाम कह देते हिन्दु धर्म। हिन्दु धर्म तो है नहीं। यह तो हिन्दुस्तान का नाम है। परन्तु इतने पत्थर बुधि बन्दर बुधि बन गये हैं जो कुछ भी समझते नहीं। रावण बुधि भी कह सकते हैं। यह कौन कहते हैं भगवानुवाच। भगवान कहते हैं कि यह सभी जंगली जनावर बन्दर बन गये हैं। अभी हम ने इन बन्दरों की सेना ली है। यह सारी दुनिया लंका है रावण की। रावण राज्य है ना। बाकी सोने की लंका कोई थी नहीं। रावण राज्य शुरु होता है द्वापर से। जब रजोगुणी होता है। बाकी तो सभी है भक्ति मार्ग के गपोड़े। बाप समझाते हैं तुम कितने गपोड़ सुनते आये हो। कहते हैं कल्प लाखों वर्ष का है। मनुष्य 84 लाख जन्म लेते हैं। बाप कहते हैं अपने से भी जो तो मेरी ग्लानी करते हैं। अपने लिए तो 84 लाख जन्म कहते, मुझे

तो कण2 पत्थर ठिक्कर में कह देते। ऐसे कहने वाले अपकारीमेरी निन्दा करने वाले जो है उन पर भी हम उपकार करता हूं। बाप कहते हैं इसमें तुम्हारा दोष नहीं हैं। यह तो ड्रामा का खेल है। इस खेल को समझना है। सतयुग आद से कलियुग अन्त तकयह ड्रामा है। यह चक्र फिरता ही रहता है। यह सिवाय बाप के और कोई समझा न सके। वह बाप है सभी आत्माओं का पिता। वह आकर शरीर में प्रवेश करते हैं। तुम सभी ब्रह्मा कुमार कुमारियां हो। तुम ब्राहमण हो ईश्वरीय सन्तान। तुम ईश्वरीय परिवार में बैठे हो। सतयुग में होगा दैवी परिवार। इस पुरुषोत्तम संगम युग पर हैं ईश्वरीय परिवार। बाप सम्भालते भी है पढ़ाते हैं। फिर गुल2 बनाकर साथ में ले जावेंगे। डर्टी ब्रूट्स से देवता बनाते हैं। डर्टी ब्रूट को असुर, डेविल कहा जाता है। यह सभी हैं आसुरी सम्प्रदाय। सतयुग में होते हैं दैवी सम्प्रदाय। कलियुग में हैं आसुरी सम्प्रदाय। फिर बाप आकर आसुरी से दैवी सम्प्रदाय बनाते हैं। तुम पढ़ते हो मनुष्य से देवता बनने। ग्रन्थ में भी है ना मनुष्य से देवता करत करत न आगे बार। इसलिए इनको जादूगर कहा जाता है। नर्क को स्वर्ग बनाना जादू का खेल है ना। स्वर्ग को नर्क बनने में 84 जन्म, फिर नर्कसे स्वर्ग बनने में सेकण्ड लगता है। एक सेकण्ड में जीवन मुक्ति। मैं आत्मा हूं। आत्मा को भी जान लिया। बाप को भी जान लिया। और कोई यह भी नहीं जानते कि आत्मा क्या चीज़ है। तुम 100% देवता बुधि थे। फिर 100% डिफर बुधि, पत्थर बुधि बन गये हो। भगवानुवाचः इन सन्यासियों आद जनको पूजते हैं सभी हिरण्यकशियपु जैसे डिफरबुधि हैं। तुमको भी डिफर बुधि बना दिया है। अनेक गुरु है ना। सदगुरु एक ही होता है। कहते भी हैं सतगुरु अकाल। परमपिता परमात्मा एक ही गुरु है। परंतु गुरु कितने ढेर हो पड़े हैं। हैसभी विकारी। निर्विकारी कोई है नहीं। कहेंगे सन्यासी हैं नहीं। जन्म तो फिर भी विकार से, भ्रष्टाचार से होता है। सतयुग में रावण राज्य, 5 विकार होते ही नहीं। उन्हों को कहा ही जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। इन देवताएं के सिवाय और कोई कोसम्पूर्ण निर्विकारी नहीं कहा जाता। अभी राजधानी स्थापन हो रही है। तुम बच्चे यहां राजाई पढ़ते हो। राजयोगी हो। तुम हो राजयोगीबेहद के सन्यासी। वह है हठयोगी हद के सन्यासी। पहले उन्हों में भी ताकत थी। अभी नहीं हैं। अभी तो जंगल में रह नहीं सकते। सभी अन्दर घूस पड़े हैं। ऐसे विधवा आरफन बनाने वाले सन्यासियों कोफिर भी जाकर चेले बनते हैं। उनके पांव धोकर पीते हैं। उनको भगवान गुरु समझ करपूजते हैं। कहां सदगुरु एक जो सर्व की सदगति करने वाला कहां यह अनेक गुरु। यह तो तुम्हारी दुर्गति करते हैं। हम सभी को सदगति कर सुखी बनाते हैं। मुझे ही कहते हैं सदगुरु अकाल। हम थोड़ी शरीर छोडते लेते नहीं। काल नहीं खाता। तुम्हारी भी आत्मा तो अविनाशी है। परन्तु पतित, पावन बनते हैं। सन्यासी लोग तो कहते आत्मा निर्लेप है। ऐसी बातें गुरु लोगने बता दिया है। दुर्गति तरफ ले जाते हैं। अनेक प्रकार के गुरु हैं। खुद कहते हैं हम ने 12 गुरु किये हैं। वहसभी हैं निवृति मार्ग वाले। ड्रामा राज भी बाप ने बता दिया है। रचयिता की रचना के आदि मध अन्त का नालेज देते हैं। कोई भी मनुष्य समझा न सके। ज्ञान का सागर वही बाप है। वही तुमको मनुष्य से देवता देवता, डबल सिरताज बनाते हैं। तुम्हारा जन्म कौड़ी जैसा था। अभी तुम हीरे जैसा बन रहे हो। बाप ने मंत्र का भी अर्थ समझाया है। वह कहें देते आत्मासो परमात्मा। परमात्मा सो आत्मा। हम सो हम। बाप कहते हैं यह भी जंगलीपना है। हम आत्मा सो परमात्मा फिर कैसे बन सकते हैं। बाप तुमको समझाते हैं हम आत्मा इस समयसो ब्राहमण बन रहे हैं। फिर हम आत्मा ब्राहमण से देवता बनेंगे। फिर सो क्षत्री .... फिर शुद्र से ब्राहमण बनेंगे। सब से ऊंचा जन्म तुम्हारा है। यह है ईश्वरीय घर। तुम किसके पास बैठे हो? मात-पिता। सभी भाई2 हैं। बाप आत्मओं को शिक्षा देते हैं। तुम सभी हमारे बच्चे हो। वर्से के हकदार हो। अज्ञान काल में कन्या को वर्सा नहीं मिलता है। यहां तुम सभी आत्माएं बच्चे हो इसलिए परमात्मा बाप से हर एक वर्सा ले सकते हो। बूढ़े छोटे बड़े सभी को हक है बाप से वर्सा लेने का। इसलिए बच्चों को भी यही सिखलाओ समझाओ अपन को आत्मा समझ बाप

बाप को याद करो। तो पाप कटते जावेंगे। भक्ति मार्ग वाले इन बातों को कुछ भी समझ न सके। वह जैसे ईडियट कांटा बैठा है। यह भी बच्चों को समझाया है कि द्वापर से ही रावण राज्य शुरु होता है। जब वाममार्ग में जाते हैं। वही निर्विकारी सो फिर भी विकारी बनते हैं। देवतायें ही फिर फिर विकार में जाते हैं। उनकी निशानियां भी जगन्नाथ मंदिर में है। वह वाममार्ग के चित्र हैं। उनको देख पतित मनुष्य कहते हैं देवतायें तो विकार में जाते हैं ना। निशानियां है भल पर इसका अर्थ नहीं समझते हैं। वही देवतायें वाममार्ग में जाने से विकारी बनते हैं। ऐसे बहुत जगह छी छी चित्र रखे हैं। कल तुम भक्ति करते थे आज नहीं करते हो। अभी तो बाप से वर्सा लेना है। रावण से आधा कल्प सराप मिला है। पुजर्नजन्म लेते2 यह हाल हुआ है। भारत ही सरापित हो गया है। रावण सराप, राम वर्सा। यह खेल ही है सराप और वर्से का। रावण राज्य में तुम सीढ़ी गिरते हो। राम आकर फिर तुमको वर देते हैं देवता बनने की। रावण राज्य औ रामराज्य। रावण राज्य को घोर अंधियारा राज्य कहा जाता है। राम राज्य को घोर सोझरा राज्य कहा जाता है। इसलिए शिव रात्रि कहते हैं। और कृष्ण की जयन्ति कहा जाता है। कृष्ण की जयन्ति होती है तो वेला लेते हैं। शिव रात्रि है, कोई जानते भी नहीं। बाप कहते हैं घोर-अंधियारा अर्थात द्वापर से रावण राज्य शुरु होता है। फिर घोर अंधियारे में मैं आता हूं। घोर सोझरा करने। अज्ञान अंधेर विनाश ·· भक्ति मार्ग में दर दर भटकने का कितना होता है। गीता की रिजल्ट कुछ भी नहीं दिखाई है। पिछाड़ी चार पाण्डव आद पहाड़ में गल गये। प्रलय हो गई। यह सभी हैं मनुष्यों की बनाई हुई भक्ति मार्ग के शास्त्र। मैं तुमको इन सभी वेदो शास्त्रों का सार समझाता हूं। यह है दुर्गति में ले जाने के शास्त्र। सभी झूठ है। झूठी माया ··· 5 विकार ही झूठा बनाते हैं। तुम्हारी आत्मा भी झूठी बन जाती है। साधु सन्त आद कुछ भी कहेंगे झूठ ही बोलेंगे। सत्य बतलाने वाला सदगुरु एक ही हैं। बाकी सभी हैं झूठ। सदगुरु आधा कल्प लिए राज्य देकर जाते हैं। झूठे गुरु सभी गंवाये देते हैं। फिर ऐसा गुरु करने से फायदा ही क्या। एक को याद करना चाहिए ना। भक्ति मार्ग में गाते भी हैं आप आवेंगे तो हम सभी को त्याग कर एक आप के बनेंगे। तो अभी बाप मिला है तो और किसको भी याद न करो। अपन को आत्मा मुझे बाप को याद करो तो पाप कट जावेंगे। मूल बात है याद की। अन्त काल शरीर या और कोई सम्बन्धी धन-दौलत आद याद आता है तो फिर पुनर्जन्म लेनापड़ेगा। काशी करवट भी बनारस में जाकर खाते हैं ना। अभी वह बन्द कर दिया है। तुम ने भी काशी करवट खाया है ना। शिव बाबाके बने हो। तो भक्ति मार्ग में भी समझते हैं हम शिव बाबा के बनें इसलिए काशी करवट दिखाई है। भक्ति मार्ग ऐसे जबकशी करवट खाकर शरीर छोड़ते हैं तो उनके सभी पाप कट जाते हैं। भोगना भोग लेते हैं पापों का खाता चुकुत हो जाता है। सजा खाकर। फिर भी वापस कोई नहीं जाता। क्यों कि यह ड्रामा है। वापस कोई जा नहीं सकते। भल क्या भी करे। न मोक्ष को पा सकते हैं। न वापस ही जा सकते। कायदा ही नहीं। जब ड्रामा का चक्र पूरा होता है तब मैं आता हूं। जब ऊपर से सभी आवेंगे तब मैं आता हूं। जब ऊपर से सभी आ जावेंगे तब विनाश होगा। फिर मैं भी जाऊंगा तो तुम भी जावेंगे। बाकी पहाड़ पर पाण्डव गल मरे ऐसी बात नहीं है। वह तो आपघात हो जाये। तो बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। सन्यासी साधुओं आद के संग में बिलकुल ही तमोप्रधान बन पड़े हैं। गुरुओं को याद करते रहते। पतित मनुष्य, पतित गुरु को ही याद करेंगे तो क्या होगा। पतित, पतित को दान करेंगे तो क्या होगा पितत ही बनते जाते हैं। पावन कोई बन न सके। सर्व की सदगति दाता एक ही है। फिर सर्व की दुर्गति दाता है अनेक। स्त्री का पति भी कहते गुरु है, स्त्रीयां निवृत्ति मार्ग वाले सन्यासियों को क्यों गुरु करती हैं। घोर-अंधियारा है ना। इसलिए भगवानुवाच है। मैं आता हूं। जिनका साधु नाम है उनका भी मुझे उधार करना होता है। इस समय सारी दुनिया ही पतित है। सभी का उधार करना पड़ता है। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। नमस्ते।